उसने हमें पवित्रशास्त्र दिया: व्याख्या की नींव

अध्ययन मार्गदर्शिका

अध्याय सात:

पवित्रशास्त्र को जीवन में लागू करना

THIRD MILLENNIUM MINISTRIES

Biblical Education. For the World. For Free.

विषय-वस्तु सूची

इस अध्याय और मार्गदर्शिका का उपयोग कैसे करें 3

नोट्स 4

I. **परिचय** (0:20) 4

II. **आवश्यकता** (5:27) 4

III. **सम्पर्क** (11:29) 5
- क. परमेश्वर (11:54) 5
  - 1. शाश्वत मंत्रणा (15:30) 5
  - 2. चरित्र (17:23) 6
  - 3. वाचा की प्रतिज्ञाएँ (18:48) 6
- ख. संसार (20:45) 7
- ग. लोग (23:20) 7
  - 1. पापपूर्ण स्वरूप (23:55) 7
  - 2. धार्मिक विभाजन (27:46) 8
  - 3. जातियाँ (29:36) 8

IV. **घटनाक्रमों में विकास** (31:39) 9
- क. युगान्तरकारी (32:34) 9
- ख. सांस्कृतिक (37:33) 10
- ग. व्यक्तिगत् (42:00) 10

V. **सारांश** (43:24) 10

पुनर्विचार हेतु प्रश्न 11

लागू करने हेतु प्रश्न 15

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ www.thirdmill.org 2014 के द्वारा

इस अध्याय और मार्गदर्शिका का उपयोग कैसे करें

इस अध्ययन मार्गदर्शिका को सम्बद्ध वीडियो अर्थात् चलित दृश्य अध्यायों के साथ संयुक्त रूप में उपयोग करने के लिए निर्मित किया गया है। यदि आपके पास वीडियो उपलब्ध नहीं हैं, तो यह अध्ययन मार्गदर्शिका ऑडियो अर्थात् श्रव्य अध्याय और/या अध्याय की मूल प्रतियों के संस्करणों के साथ कार्य करने के लिए भी सहायता देंगे। इसके अतिरिक्त, अध्याय और मार्गदर्शिका की मंशा एक सीखने वाले समुदाय के उपयोग के लिए की गई है, परन्तु साथ ही इनका उपयोग यदि आवश्यक है तो व्यक्तिगत् अध्ययन के लिए भी किया जा सकता है।

- **इससे पहले कि आप अध्याय को देखें**
    - **स्वयं को तैयार करें** – किसी भी अनुशंसित अध्यायों को पढ़ कर पूरा कर लें।
    - **देखने के लिए समय निर्धारित करें** – इस मार्गदर्शिका के नोट्स खण्ड में, अध्याय को उन भागों में विभाजित किया गया है जो कि वीडियो के साथ सम्बद्ध हैं। प्रत्येक मुख्य भाग के साथ दिए हुए लघुकोष्ठकों में दिए हुए समय कोड्स का उपयोग, यह निर्धारित करता है कहाँ से अध्याय देखना आरम्भ किया जाए और कहाँ देखना समाप्त होता है। थर्ड मिलेनियम के अध्याय सघनता से सूचनाओं के साथ भरे हुए हैं, इसलिए हो सकता है कि आप इसे कई टुकड़ों में देखना चाहेंगे। इन टुकड़ों को मुख्य भागों के अनुसार होना चाहिए।
- **जब आप अध्याय को देख रहे हैं तब**
    - नोट्स बनाएं — अध्ययन मार्गदर्शिका के नोट्स खण्ड अध्याय की मूल रूपरेखा की जानकारी रखते हैं, जिसमें प्रत्येक खण्ड को आरम्भ किए जाने के लिए समय कोड्स और कुँजी नोट्स सम्मिलित हैं जो कि आपका मार्गदर्शन इन सूचनाओं के लिए करेंगे। अधिकांश मुख्य विचारों को पहले से ही सारांशित कर दिया गया है, परन्तु इन्हें स्वयं के नोट्स के द्वारा पूरक किया जाना सुनिश्चित करें। आपको समर्थन देने वाली अतिरिक्त सामग्री को भी जोड़ना चाहिए जो आपको मुख्य विचारों को स्मरण करने, विवरण देने से और इनका बचाव करने में सहायता प्रदान करेंगे।
    - **टिप्पणियों और प्रश्नों को लिख लें** – जब आप वीडियो को देखते हैं, तब हो सकता है कि जो कुछ आप सीख रहे हैं उसके प्रति आपके पास टिप्पणियाँ और/या प्रश्न हों। अपनी टिप्पणियों और प्रश्नों को हाशिये में लिखें ताकि इन्हें आप अध्याय को देखने के पश्चात् समूह के साथ साझा कर सकते हैं।
    - **अध्याय के भागों को देखते समय लघु ठहराव/पुन: आरम्भ बटन का उपयोग करें –** आप पाएंगे कि कुछ निश्चित स्थानों पर पुनर्विचार के लिए कठिन अवधारणाएँ, या रूचिपूर्ण बातों पर विचार विमर्श या अतिरिक्त नोट्स लिखने के लिए वीडियो का लघु ठहराव या इसे पुन: आरम्भ करना सहायतापूर्ण है।
- **आपके द्वारा अध्याय को देख लेने के पश्चात्**
    - **पुनर्विचार के लिए प्रश्नों को पूरा करें** – पुनर्विचार के लिए प्रश्न अध्याय की मूल विषय-वस्तु के ऊपर आधारित है। आपको उपलब्ध किए हुए स्थान में पुनर्विचार के प्रश्नों के उत्तर को देना चाहिए। इन प्रश्नों को एक समूह की अपेक्षा व्यक्तिगत् रूप से पूरा किया जाना चाहिए।
    - **उपयोग के लिए प्रश्नों का उत्तर दें/विचार विमर्श करें** – उपयोग हेतु प्रश्न ऐसे प्रश्न हैं जो कि इस अध्याय की विषय-वस्तु के साथ सम्बद्ध होते हुए मसीही जीवन यापन, धर्मविज्ञान और सेवकाई से सम्बधित हैं। उपयोग हेतु प्रश्न लिखित गृहकार्यों या समूह के विचार विमर्श के लिए विषयों के लिए उपयुक्त हैं। क्योंकि लिखित गृहकार्यों के लिए, यह अनुशंसा की जाती है कि उत्तर एक पृष्ठ से अधिक लम्बा नहीं होना चाहिए।

© 2013 थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ के द्वारा
www.thirdmill.org

नोट्स

I. परिचय (0:20)

उपयोग:

बाइबल के एक दस्तावेज के मूल अर्थ को उचित रूप से समकालीन श्रोताओं के साथ इस तरीके से सम्बन्धित करना कि वह उनकी अवधारणाओं, व्यवहारों और भावनाओं को प्रभावित करे।

मूल अर्थ :

वे अवधारणाएँ, व्यवहार और भावनाएँ जिन्हें दिव्य और मानव लेखकों ने संयुक्त रूप से अपने पहले श्रोताओं को सम्प्रेषित करने के लिए दिए गए दस्तावेज़ में इच्छित किया।

एक मूलपाठ के उचित रूप से आधुनिक उपयोग के लिए इसे मूल अर्थ के साथ सदैव विश्वासयोग्य होना चाहिए और इसे आधुनिक समयों, संस्कृतियों और व्यक्तियों को ध्यान में रखना चाहिए।

II. आवश्यकता (5:27)

पवित्रशास्त्र से उचित तरीके से लाभ प्राप्त करने के लिए, हमें इससे प्रभावित होना आवश्यक है; हमारी अवधारणाओं, व्यवहारों और भावनाओं में परिवर्तन आना आवश्यक है।

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ www.thirdmill.org 2014 के द्वारा

पौलुस ने पुराने नियम की कहानियों को नए नियम की कलीसिया के ऊपर लागू दोनों अर्थात् मूल श्रोताओं और उसके श्रोताओं के मध्य में हुए परिवर्तनों को ध्यान में रखते हुए किया।

III. सम्पर्क (11:29)

मूल प्राचीन और आधुनिक श्रोताओं के बीच के सम्बन्ध और निरन्तरता है जो बाइबल के मूलपाठ को आधुनिक लोगों के लिए प्रासंगिक बनाता है।

क. परमेश्वर (11:54)

मूल प्राचीन और आधुनिक श्रोताओं दोनों तरह के श्रोताओं के पास वही एक परमेश्वर है।

परमेश्वर अपरिवर्तनीय, अर्थात् वह कभी परिवर्तित नहीं होता है।

1. शाश्वत मंत्रणा (15:30)

परमेश्वर की शाश्वत मंत्रणा, या इतिहास के लिए परमेश्वर की अन्तिम योजना, अपरिवर्तनीय है।

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ www.thirdmill.org 2014 के द्वारा

परमेश्वर सब कुछ जानता है, और वह इतिहास को अन्त की ओर ले चलने के लिए प्रयोग कर रहा है, जिसके लिए उसने इसे रचा है।

2. चरित्र (17:23)

परमेश्वर उसके चरित्र में भी अपरिवर्तनीय है। अपने तत्व में, व्यक्तित्व में और गुणों में वह कभी भी परिर्वर्तित नहीं होता है।

परमेश्वर का अपरिवर्तनीय चरित्र का अर्थ यह है कि वह अपने मूल अर्थ और पवित्रशास्त्र के आधुनिक उपयोग के मध्य सदैव ही विशेष सम्पर्क रहेगा।

3. वाचा की प्रतिज्ञाएँ (18:48)

परमेश्वर केवल उसे ही प्रतिज्ञा के रूप में लेता है जिसकी उसने प्रतिज्ञा की है, या जिसकी उसने वाचा बान्धी है, या एक शपथ को लिया है।

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ www.thirdmill.org 2014 के द्वारा

जहाँ परमेश्वर ने एक प्रतिज्ञा को नहीं बनाया है, उसके वचनों को श्राप के लिए खतरे स्वरूप या आशीषों के प्रस्ताव के रूप में समझ लिया गया है।

ख. संसार (20:45)

मूल पाठकों के समान ही, हम उसी संसार में रहते हैं जिसमें पवित्रशास्त्र के मूल पाठक पहले वास करते थे।

हमारे संसार और पवित्रशास्त्र के संसारों के पहले श्रोताओं के मध्य सम्बन्ध बाइबल के आधुनिक उपयोगों को निर्धारित करने में हमारी सहायता कर सकता है।

ग. लोग (23:20)

हम उन जैसे ही लोग हैं जैसे पवित्रशास्त्र के मूल श्रोता थे।

1. पापपूर्ण स्वरूप (23:55)

परमेश्वर ने मानव की रचना की अपने स्वरूप में की, परन्तु हस सभी पाप में गिर गए हैं।

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ www.thirdmill.org 2014 के द्वारा

पवित्रशास्त्र के सभी प्राप्तकर्ता, चाहे वे प्राचीन हों या आधुनिक, उसी एक जैसे समान पापपूर्ण स्वभाव को साझा करते हैं।

2. धार्मिक विभाजन (27:46)

पवित्रशास्त्र के मूल और आधुनिक श्रोता दोनों धार्मिक विभाजनों से दुख उठाते हैं।

पवित्रशास्त्र के पढ़ने वालों को तीन धार्मिक समूहों में विभाजित कर दिया गया है:

- अविश्वासी: वे लोग हैं जो परमेश्वर के प्रति अधीन होने से इन्कार करते हैं।
- झूठे विश्वासी: वे लोग जो परमेश्वर के साथ सतही प्रतिबद्धताओं को निर्मित करते हैं।
- विश्वासी : वे लोग हैं जो कि परमेश्वर के साथ ईमानदारी, विश्वासयोग्य प्रतिबद्धताओं को निर्मित करते हैं

3. जातियाँ (29:36)

मूल और आधुनिक श्रोता एक जैसे ही हैं क्योंकि एक ही जाति के लोग निरन्तर पूरे इतिहास में विद्यमान हैं।

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ www.thirdmill.org 2014 के द्वारा

पवित्रशास्त्र के बहुत सारे अंश विशेषकर विशेष किस्म के नस्लों की ओर निर्देशित है।
जिस तरह के सम्पर्कों को हम विभिन्न जातियों के लोगों के साथ साझा करते हैं जो कि प्रत्येक युग में रहे हैं यह पवित्रशास्त्र के उपयोग को लागू करने में हमारा मार्गदर्शन करते हुए सहायता करता है।

IV. घटनाक्रमों में विकास (31:39)

मूल और आधुनिक श्रोताओं के मध्य में घटनाक्रमों का विकास हमारे उपयोग को प्रभावित करना चाहिए।

क. युगान्तकारी (32:34)

हमें छुटकारे के इतिहास के युगान्तकारी घटनाक्रम के विकास की गणना करने की आवश्यकता है जब हम बाइबल को आधुनिक जीवन के ऊपर लागू करते हैं।

संसार के इतिहास के ऊपर बाइबल के दृष्टिकोण को तीन चरणों में सारांशित किया है:

- सृष्टि : जब परमेश्वर ने सबसे पहले संसार की रचना की।
- पतन : जब मानव ने पहला पाप किया और परमेश्वर की ओर से श्रापित ठहरे।
- छुटकारा : परमेश्वर हमें हमारे पापों से छुटकारा देता है।

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ www.thirdmill.org 2014 के द्वारा

सृष्टि के ऊपर शासन का परमेश्वर का प्रगतिशील स्वभाव के परिणामस्वरूप तीन युगों के बीच में समय-समय पर घटनाक्रमों में अंतराल को उत्पन्न किया है।

ख. सांस्कृतिक (37:33)

कई सांस्कृतिक घटनाक्रम के विकास हमारी आज की संस्कृति को उस संस्कृति से अलग करती है, जिसमें बाइबल को परोक्ष में सम्बोधित किया गया है।

ग. व्यक्तिगत् (42:00)

हमें यह स्वीकार करने की आवश्यकता है कि आधुनिक और प्राचीन लोगों के बीच कई भिन्नताएं भी हैं यदि हम बाइबल आधारित मूलपाठ को उचित तरीके से लागू करने की आशा करते हैं।

V. सारांश (43:24)

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ www.thirdmill.org 2014 के द्वारा

पुनर्विचार हेतु प्रश्न

1. पवित्रशास्त्र के मूल अर्थ को समझना क्यों इतना महत्वपूर्ण हैं जब हम हमारे आज के दिनों में बाइबल को लागू करने का प्रयास करते हैं ?

2. परमेश्वर की अपरिवर्तनीयता के महत्वपूर्ण पहलूओं का वर्णन करें, और विवरण दें कि कैसे परमेश्वर के अपरिवर्तनीय गुण यह पुष्टि करते हैं कि हम उसी परमेश्वर में विश्वास करते हैं जिसमें मूल श्रोता करते थे।

© 2013 थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ के द्वारा
www.thirdmill.org

3. किस तरह से यह संसार जिसमें हम रहते हैं उसी संसार के जैसा है जिसमें पवित्रशास्त्र के मूल पाठक रहते थे ? उदाहरणों को दें ?

4. कम से कम तीन तरीकों का वर्णन करें कि आज के लोग पवित्रशास्त्र के मूल श्रोताओं के जैसे ही हैं ?

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ www.thirdmill.org 2014 के द्वारा

5. छुटकारे के इतिहास के जीवन चक्र में कुछ युगान्तकारी घटनाओं का विकास हुआ हुआ है का नाम ले कर बताएँ। किस तरह से इन घटनाक्रमों ने हमारे संसार को बाइबल के संसार से भिन्न कर दिया है ?

6. कौन से सांस्कृतिक विकासों ने हमारी आज की संस्कृति को बाइबल में सम्बोधित की गई संस्कृति से भिन्न करती है ?

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ www.thirdmill.org 2014 के द्वारा

7. छुटकारे के इतिहास के जीवन चक्र में घटित हुए कुछ व्यक्तिगत् घटनाक्रमों का वर्णन करें जो आज के लोगों को बाइबल के मूल पाठकों के लोगों से भिन्न करते हैं।

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ www.thirdmill.org 2014 के द्वारा

लागू करने हेतु प्रश्न

1. बाइबल के एक प्रसंग के मूल अर्थ की आपकी जानकारी किस तरह से आपके आधुनिक उपयोग को प्रभावित करती है? एक निश्चित उदाहरण दें।

2. इस सच्चाई से कि परमेश्वर अपरिवर्तनीय है से आपको क्या उत्साह मिलता है?

3. कई तरीके से, हमारा संसार विशेष रूप से उस संसार से जो उस समय विद्यमान था जब बाइबल लिखी गई थी से भिन्न था। कैसे ये भिन्नताएँ उस तरीके को प्रभावित करती हैं जिसमें हम पवित्रशास्त्र को आज लागू करते और लोगों की सेवा करते हैं?

4. परमेश्वर के पाप से भरे हुए स्वरूप होने नाते, क्या आपको पवित्रशास्त्र के उपयोग और इसकी व्याख्या में अपने विश्वास को रखना चाहिए? अपने उत्तर का विवरण दें।

5. वे कौन से निश्चित तरीके हैं जिनमें आप अपने प्रभाव के क्षेत्र में झूठे विश्वासियों और अविश्वासियों तक पहुँच हैं? कौन सी पद्धतियाँ सबसे ज्यादा प्रभावशाली रही हैं? कौन सी पद्धतियाँ असफल हो गई हैं?

6. कौन से कुछ व्यावहारिक तरीके हैं जो बाइबल के मूल पाठकों के साथ सम्पर्क स्थापित करने में आपकी सहायता करते हैं?

7. आप कैसे किसी ऐसे व्यक्ति को उत्तर देंगे जो यह दावा करता है कि छुटकारे के इतिहास के युगान्तकारी घटनाक्रम का अर्थ यह है कि बाइबल के कुछ निश्चित संदर्भ आज के लिए अब और अधिक प्रासंगिक नहीं रहे?

8. क्या आपको यह जानते हुए बाइबल की व्याख्या करना और इसे लागू करना कठिन जान पड़ता है कि हमारी संस्कृति मूल पाठकों की संस्कृति से भिन्न थी ? अपने उत्तर की व्याख्या करें।

9. कैसे बाइबल में पाए जाने वाले मूल सिद्धान्त मूल पाठकों और आधुनिक पाठकों के मध्य में पाई जाने वाली खाई को पाट देते हैं?

10. इस अध्याय से कौन सी सबसे महत्वपूर्ण बात को आपने सीखा है?

© 2013 थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ के द्वारा
www.thirdmill.org